News Expert
13h ·

एक टन पुआल में 400 किलोग्राम मिट्टी में मिलता जैविक पदार्थ:- कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ.डी. आर. सिंह ने किसानों को दीपावली की शुभकामनाएं देते हुए अपील की है कि वे धान की फसल अवशेषों को खेत में न जलाएं क्योंकि पराली जलाने से भूमि की उपजाऊ शक्ति नष्ट हो जाती है। उन्होंने बताया कि 1 टन पुआल को मिट्टी में मिलाने से 5.5 किलोग्राम नत्रजन, 2.3 किलोग्राम फास्फोरस, 25 किलोग्राम पोटाश, 1.2 किलोग्राम सल्फर तथा 400 किलोग्राम जैविक पदार्थ सहित अन्य पोषक तत्व मिट्टी में मिल जाते हैं। फल स्वरुप मृदा की उर्वरा शक्ति में वृद्धि होती है। और अगली फसल लेने में फसल लागत कम आती है। जबकि फसल अवशेषों को जलाने से मिट्टी का तापमान बढ़ने के कारण मृदा में उपलब्ध सूच्छम जीवाणु, केंचुआ आदि मर जाते हैं। इसके अतिरिक्त जैविक कार्बन जो पहले से ही मिट्टी में कम है जलकर नष्ट हो जाता है।फलत: जमीन बंजर एवं अनुउत्पादक हो जाती है। साथ ही वातावरण दूषित हो जाता है। तथा मानव स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह ने किसानों को सलाह दी है कि वे भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली द्वारा विकसित एक जैव अपघटक 'पूसा डी कंपोजर' फसल के अवशेषों को 15 से 20 दिनों में खाद में बदल देता है इस डी कंपोजर में ₹20 की लागत वाले 4 कैप्सूल का एक पैकेट होता है। जो धान की भूसे के घटकों पर कार्य करने की क्षमता रखने वाले एंजाइम का उत्पादन करता है। सक्रीय कवक के साथ पुआल 15 से 20 दिनों में विघटित हो जाता है व खाद बन जाती है।

WORLD खबर एक्सप्रेस

पुआल को मिट्टी में मिलाएं, जैविक पदार्थ पाएं: डॉ. डीआर सिंह

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने अपील की है कि धान की फसल के अवशेषों को खेत में न जलाएं, क्योंकि पराली जलाने से भूमि की उपजाऊ शक्ति नष्ट हो जाती है। उन्होंने बताया कि एक टन पुआल को मिट्टी में मिलाने से 5.5 किलोग्राम नाइट्रोजन, 2.3 किलोग्राम फास्फोरस, 25 किलोग्राम पोटाश, 1.2 किलोग्राम सल्फर तथा 400 किलोग्राम जैविक पदार्थ सहित अन्य पोषक तत्व मिट्टी में मिल जाते हैं। फल स्वरूप मृदा की उर्वरा शक्ति में वृद्धि होती है। अगली फसल लेने में फसल लागत कम आती है। कुलपति ने किसानों को सलाह दी है कि वे भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली द्वारा विकसित एक जैव अपघटक पूसा डी कंपोजर फसल के अवशेषों को 15 से 20 दिनों में खाद में बदल देता है। इस डी कंपोजर में 20 की लागत वाले चार कैप्सूल का एक पैकेट होता है। जो धान की भूसे के घटकों पर कार्य करने की क्षमता रखने वाले एंजाइम का उत्पादन करता है। सक्रिय कवक के साथ पुआल 15 से 20 दिनों में विघटित हो जाता है व खाद बन जाती है।

वर्ष 15 अंक 303 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रू0 कानपुर, शुक्रवार 05 नवम्बर 2021
कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी, एटा, हरदोई, उन्नाव, कानपुर देहात में प्रसारित
RNI N.UPHIN/2007/27090
दैनिक नगर छाया
आप की आवाज़.....

फसलों के अवशेषों को जलाने से भूमि की उपजाऊ शक्ति नष्ट हो जाती है : डॉ. डी.आर. सिंह

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ.डी. आर. सिंह ने किसानों को दीपावली की शुभकामनाएं देते हुए अपील की है कि वे धान की फसल अवशेषों को खेत में न जलाएं क्योंकि पराली जलाने से भूमि की उपजाऊ शक्ति नष्ट हो जाती है। उन्होंने बताया कि 1 टन पुआल को मिट्टी में मिलाने से 5.5 किलोग्राम नत्रजन, 2.3 किलोग्राम फास्फोरस, 25 किलोग्राम पोटाश, 1.2 किलोग्राम सल्फर तथा 400 किलोग्राम जैविक पदार्थ सहित अन्य पोषक तत्व मिट्टी में मिल जाते हैं। फल स्वरुप मृदा की उर्वरा शक्ति में वृद्धि होती है। और अगली फसल लेने में फसल लागत कम आती है। जबकि फसल अवशेषों को जलाने से मिट्टी का तापमान बढ़ने के कारण मृदा में उपलब्ध सूच्छम जीवाणु, केंचुआ आदि मर जाते हैं। इसके अतिरिक्त जैविक कार्बन जो पहले से ही मिट्टी में कम है जलकर नष्ट हो जाता है फलतः जमीन बंजर एवं अनुउत्पादक हो जाती है। साथ ही वातावरण दूषित हो जाता है। तथा मानव स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह ने किसानों को सलाह दी है कि वे भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली द्वारा विकसित एक जैव अपघटक पूसा डी कंपोजर फसल के अवशेषों को 15 से 20 दिनों में खाद में बदल देता है इस डी कंपोजर में 20 की लागत वाले 4 कैप्सूल का एक पैकेट होता है। जो धान की भूसे के घटकों पर कार्य करने की क्षमता रखने वाले एंजाइम का उत्पादन करता है। सक्रीय कवक के साथ पुआल 15 से 20 दिनों में विघटित हो जाता है व खाद बन जाती है।

Sign in to edit and save changes to this file.

आज महानगर कानपुर,5 नवम्बर 2021 2

अलसी के सेवन से जुकाम में फायदा, ट्यूमर की ग्रोथ पर भी अंकुश

अलसी पैदावार में विश्व में पांचवें स्थान पर भारत

कानपुर, 4 नवम्बर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय की ओर से विश्वविद्यालय की अलसी अभिजनक डॉ नलिनी तिवारी ने किसान भाइयों हेतु अलसी की वैज्ञानिक खेती के बारे में एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया कि भारतीय अर्थव्यवस्था में क्षेत्रफल एवं उत्पादन की दृष्टि से तिलहनी फसलें खाद्यान्न फसलों के बाद दूसरा महत्वपूर्ण स्थान रखती है। भारत में जलवायु की विभिन्नता के कारण कई तिलहनी फसलें उगाई जाती हैं। इन तिलहनी फसलों में राई एवं सरसों के बाद अलसी का प्रमुख स्थान है। अलसी एक प्रमुख रबी तिलहनी फसल है जिस का उत्पादन बीज एवं रेशा प्राप्त करने के लिए किया जाता है। कृषि वैज्ञानिकों का कहना है कि अलसी के छिलके में म्यूसिलेज होता है जिससे सर्दी, जुखाम,खांसी एवं खराश में फायदा होता है। अलसी में लिगनेन नामक एंटीऑक्सीडेंट होता है, जोकि एक प्लांट एस्ट्रोजन होता है। यह कैंसर रोधी होता है तथा ट्यूमर की ग्रोथ को रोकता है। डॉ. तिवारी ने बताया कि अलसी के क्षेत्रफल एवं उत्पादन की दृष्टि से भारत का विश्व में क्रमशः तृतीय एवं पंचम स्थान है क्षेत्रफल में भारत का स्थान चीन के साथ एवं कनाडा व कजाकिस्तान के बाद आता है। जबकि उत्पादन में कनाडा,कजाकिस्तान, चीन एवं यूएसए के बाद आता है। हमारे देश की अलसी का कुल क्षेत्रफल 2.94 लाख हेक्टेयर तथा उत्पादन 1.54 लाख टन एवं उत्पादकता 525 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है।उत्तर प्रदेश में अलसी का क्षेत्रफल उत्पादन एवं उत्पादकता क्रमशः 0.32 लाख हेक्टेयर ,0.17 लाख टन एवं 531 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है। उत्तर प्रदेश में अलसी की खेती बुंदेलखंड क्षेत्र जालौन, हमीरपुर, बांदा, झांसी,ललितपुर एवं कानपुर

अलसी की वैज्ञानिक खेती हेतु एडवाइजरी जारी

नगर, कानपुर देहात, बस्ती,प्रयागराज, वाराणसी, मिर्जापुर आदि में सफलतापूर्वक की जाती है। उन्होंने बताया कि अलसी की खेती जैविक एवं अजैविक दोनों प्रकार से की जा सकती है। इस समय अलसी की बुवाई का समय चल रहा है किसान भाई 20 नवंबर तक अलसी की बुवाई कर सकते हैं। किसान भाई इसे असिंचित, सिंचित दशा में अलसी के बीज की बुवाई कर दें। अलसी के बीज में खाद्य रेशा भी होता है जिसके कारण कब्ज एवं शरीर के रक्त में शर्करा के स्तर को नियमित करने में सहायक एवं कोलेस्ट्रॉल को कम करने में सहायक होता है। अलसी से प्राप्त प्रोटीन में सभी एमिनो एसिड पाए जाते है इसके बीज में ओमेगा 3 एवं ओमेगा 6 वसा अम्ल भी होते हैं। अलसी खाकर इसकी आपूर्ति करनी पड़ती है ओमेगा 6 से बुद्धि एवं स्मरण शक्ति, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। यह कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल कर हृदय घात रोकने एवं गठिया के निदान में उपयोगी है। खिलाड़ियों के मांस पेशियों के खिंचाव एवं दर्द में भी अलसी के तेल का प्रयोग किया जाता है हमारे देश में अलसी की खेती मुख्य बीज से तेल प्राप्त करने के लिए की जाती है। कुल तेल उत्पादन का 80% भाग औद्योगिक कार्यों हेतु पेंट चमड़ा, छपाई, स्याही आदि के रूप में प्रयोग की जाती है बाकी 20 तेल खाने में इस्तेमाल होता है। बीज से तेल निकालने के बाद 18 से 20 प्रतिशत प्रोटीन व 3 प्रतिशत तेल बचता है।